धर्म

अनेक लोग धर्म के बारे में सोचते हैं। धर्म और अधर्म के बारे में चर्चाएँ होती रहती हैं। मैंने खुद से पूछा, वास्तव में धर्म क्या है? फिर, मुझे एहसास हुआ कि धर्म, ईश्वर, परमात्मा, प्रकृति-पुरुष, शुद्ध चेतना, और शुद्ध ऊर्जा सभी एक ही हैं। ये सभी परमात्मा के पर्यायवाची हैं।

मुझे एक और बात पता चला कि, परमात्मा में त्रिगुण समान मात्रा में मिलकर एकजुट होकर रहता है। अर्थात 33.33% रजोगुण, 33.33% तमोगुण और 33.33% सत्वगुण होते हैं। हालांकि, परमात्मा द्वारा बनाई गई ऊर्जा रूपों में, गुणों का मिश्रण भिन्न होता है। गुणों के मिश्रण में यह भिन्नता ही प्रकृति में अनेक रूपों को बनाने के लिए जिम्मेदार है। इसलिए, समझें कि ये तीन गुण - धनात्मक, ऋणात्मक और तटस्थ, या सकारात्मक, नकारात्मक और तटस्थ या प्रोटॉन, इलेक्ट्रॉन और न्यूट्रॉन - प्रकृति के सभी वस्तुओं में उपस्थित हैं।

परमात्मा आनंद का पर्याय है, परमानंद है। तीनों गुणों का समान अनुपात में मिश्रित होना ही कारण है कि परमात्मा हमेशा आनंदित अवस्था में रहता है। इस आनंदमयी अवस्था को प्राप्त करने के कई तरीके हैं। आप 'पिघलना' साधना या अपनी साँस पर ध्यान केंद्रित करके भी परमात्मा तक पहुँच सकते हैं। परमात्मा तक पहुँचने के बाद, हम आनंद का अनुभव करते हैं, लेकिन जैसे ही हम अपनी आँखें खोलते हैं, हम माया (भ्रम) में वापस गिर जाते हैं।

इसका अर्थ है कि हम अपने शरीर, मन और हृदय में आनंद को बनाए रखने में असमर्थ हैं। मैंने खुद से पूछा, इसका कारण क्या है? फिर, मुझे एक संदेश मिला कि जैसे ही हम ध्यान से बाहर निकलते हैं, हम तीनों गुणों में से एक को चुनते हैं और शेष दो के विरुद्ध युद्ध छेड़ देते हैं। यही कारण है कि हम अपने शरीर, मन और हृदय में दिव्य आनंद का अनुभव नहीं कर पाते हैं। इसलिए, इन स्तरों पर तीनों गुणों को चुनने और एकत्र करने की भी आवश्यकता है।

33.33% त्रिगुण साधना

शरीर

हम आम तौर पर हमेशा शारीरिक रूप से स्वस्थ रहना चाहते हैं। लेकिन मुझे एहसास हुआ कि यह एक अधार्मिक निर्णय है। क्योंकि धर्म में तीन विरुद्ध गुण समान मात्रा में एकजुट होकर रहते हैं। अर्थात 33.33% स्वास्थ्य- 33.33% बीमारी- 33.33% तटस्थ, वे तीन समान मात्रा में रहते हैं। इसलिए, मुझे संदेश मिला कि तीनों को चुनना है। इसका कारण यह है कि खांसी, छींक, बुखार, चक्कर और दर्द जैसे लक्षण हमारे दैनिक जीवन के लिए आवश्यक हैं। यदि वे प्रतिदिन काम करते हैं, तो शरीर में सभी अनावश्यक चीजें निकाल दी जाएंगी।

शरीर सदैव विकसित होता रहता है और प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों के अनुरूप स्वयं को बदलते रहता है। जिस तरह एक मोबाइल फोन को 2G से 4G में अपग्रेड करने के लिए SIM के साथ-साथ हार्डवेयर को भी अपडेट करने की आवश्यकता होती है, उसी तरह विकसित होने के लिए आपके स्वयं के सभी पहलू - शरीर, मन, हृदय आदि - को भी विकसित होना चाहिए। इसलिए, अपने अस्तित्व के भीतर एक उच्च अवस्था स्थापित करने के लिए - बीमारी, स्वास्थ्य और तटस्थता - इन तीनों शक्तियों को एक साथ मिलकर काम करना चाहिए। इसलिए, शारीरिक स्तर पर तीनों को चुनें और उनमें मित्रता बनाएं। अन्यथा, शरीर में धर्म की स्थापना करना असंभव है, अर्थात शरीर में ईश्वर के प्रवेश करना असंभव है। अधिक जानकारी के लिए 'आंतरिक यात्रा' और 'शरीर' विषयों को पढ़ें।

यहाँ, तटस्थता का अर्थ एक ऐसी स्थिति है जहाँ खेल के परिणाम की स्पष्टता नहीं है, जैसे कि बराबरी(draw), जहाँ जीतने, हारने या बराबरी की संभावना है। इस संदर्भ में, बराबरी का अर्थ दोनों खिलाड़ियों की जीत या दोनों की हार है। यही मेरा तटस्थता या सत्त्व गुण का अर्थ है। इसलिए, तटस्थता या सत्त्व गुण का अर्थ एक ऐसी स्थिति है जहाँ बीमारी और स्वास्थ्य समान अनुपात में एकजुट होना। इसी तरह, सत्वगुण का अर्थ है रजस और तमस् का बराबर अनुपात में मिश्रण। तो, मान लीजिए कि स्वास्थ्य 33%, बीमारी 33%, स्वास्थ्य-बीमारी का संयोजन 33% होना चाहिए।

मन

मानसिक स्तर पर भी तीनों को चुनें। इसका अर्थ है कि आपके मन में एक समय में केवल एक विचार आता है - या तो एक अच्छा विचार, एक बुरा विचार, या एक तटस्थ विचार। यदि आप तुरंत इस विचार को चुनते हैं, तो आप अधर्म कर रहे हैं, क्योंकि आपने तीनों को नहीं चुना है।

इसका अर्थ है कि जब आपके मन में 'डांटने' का विचार आता है, तो तुरंत उसे न चुनें। इसके बजाय, सोचें कि आप 33.33% डांटने, 33.33% प्रशंसा और 33.33% तटस्थता तीनों समान मात्रा में मिलकर रहने वाला स्वच्छ शक्ति को चुन रहे हैं। इसी तरह, जब 'प्रशंसा' का विचार आता है, तो तुरंत उसे न चुनें। सोचें कि आप 33.33% डांटने, 33.33% प्रशंसा और 33.33% तटस्थता तीनों समान मात्रा में मिलकर रहने वाला स्वच्छ शक्ति को चुन रहे हैं। इसी तरह, जब 'मैं आत्मा हूँ' विचार आता है, तो मैं 33% देह हूँ, 33% आत्मा हूँ और 33% न्यूट्रल हूँ चुनें। जब 'यह संसार है' विचार आता है, तो संसार 33% है, परमत्मा 33% है और न्यूट्रल 33% है चुनें।

जो भी विचार आए, उससे संबंधित तीनों को चुनें और थोड़ा इंतजार करें। केवल शांत और संतुलित अवस्था में पहुँचने के बाद ही आगे कोई कार्य करें। इसका अर्थ है कि ऐसा करने से, आप मानसिक स्तर पर ही ईश्वर के साथ संपर्क स्थापित करेंगे। यदि आप मानसिक स्तर पर अभ्यास करते रहते हैं, तो आप निश्चित रूप से अपने मन में धर्म की स्थापना कर पाएंगे। आपको ईश्वर तक पहुँचने के लिए अपने मन को नहीं छोड़ना होगा, क्योंकि ईश्वर स्वयं आपके मन में प्रवेश करेगा। इसका कारण यह है कि तीनों गुणों का संयोजन आपके मन को शुद्ध और शांत करेगा।

हृदय

हृदय में अच्छे, बुरे और तटस्थ की अनुभूतियां होती हैं। यदि आप भय को उत्पन्न होते ही पूरी तरह से समाप्त करने का प्रयास करते हैं, तो आप अधर्म कर रहे हैं। इसलिए, भय को अपने भीतर रहने दें, लेकिन केवल 33.33%। शेष ऊर्जा को अन्य दो में बांटकर, तीनों समान मात्रा में रहने के बाद, मिलके एकजुट होने के लिए कहिए। इसी तरह, जब साहस अधिक हो, तो उसे भी 33.33% पर रहने दें। यदि कोई पहलू 33.33% से कम है, तो उसे बढ़ाने के लिए कहें, और यदि वह 33.33% से अधिक है, तो उसे घटाने के लिए कहें। इस तरह, आप अपने हृदय में तीनों गुणों को संतुलित करके धर्म की स्थापना करेंगे।

लेकिन अगर आप ऐसा करेंगे तो पुरानी स्थिति जारी रहेगी। 2G से 4G में अपग्रेड करने के लिए, सभी पहलुओं का विकास होना चाहिए। इसका अर्थ है कि सकारात्मक, नकारात्मक और तटस्थ पहलुओं का विकास होना चाहिए। यदि एक पहलू उच्च है, तो दूसरे दो पहलुओं को भी उसी के बराबर बढ़ाएं। यदि भय उच्च है, तो उसे वहीं रहने दें और साहस और तटस्थता को भी उसी के बराबर बढ़ाएं। इसी तरह, यदि साहस उच्च है, तो उसे वहीं रहने दें और भय और तटस्थता को भी उसी के बराबर बढ़ाएं। इस तरह, आप अपने हृदय में धर्म की स्थापना करेंगे।

इस प्रकार, अंदर और बाहर, अलग-अलग अनुभव करें कि, आपके सहित सभी चीजें, त्रिगुण समान मिश्रण से बनी हैं। साथ ही सम्पूर्ण विश्व को सामूहिक रूप से अनुभव करें, जिसमें प्रत्येक वस्तु त्रिगुणों के समान मिश्रण से बनी है।

त्रिगुणों पर विजय प्राप्त करें

काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, जैसे बुरे गुण हमारे मन में पैदा होते है, तो हमें लगता है कि हम आध्यात्मिक रूप से आगे नहीं बढ़ रहे हैं, हम अपना आध्यात्मिक अभ्यास सही तरीके से नहीं कर रहे हैं, और हम गलतियाँ कर रहे हैं। यह विचार हमें दुखी महसूस कराता है। लेकिन अगर हम उस आध्यात्मिक अभ्यास का पालन करते हैं जिसके बारे में मैंने बताया, जिसमें सब कुछ संतुलन में होना चाहिए, तो हमारे भीतर का अपराध की भावना खत्म हो जाएगा।

यह इसलिए है क्योंकि एक शुद्ध ऊर्जा को माया द्वारा तीन में विभाजित किया जा रहा है। इसलिए, तीनों गुणों का अस्तित्व होना चाहिए, लेकिन संतुलन में। इसलिए, तीनों गुणों का प्रतिनिधि बनने की, तीनों गुणों का अधिपति बनने की, और तीनों गुणों पर विजय प्राप्त करने की इच्छा आपके भीतर बढ़ेगी। इसके परिणामस्वरूप, आपमें यह भावना स्थिर हो जाता है कि, मुझमें 33.33% बुरे गुण रहना गलत नहीं है।

जैसे कि पांच उंगलियाँ, अलग-अलग होने के बावजूद, एक साथ उपयोग की जा सकती हैं, या मुट्ठी बनाकर एक साथ उपयोग की जा सकती हैं। इसी तरह हमारे भीतर की तीन विरोधी शक्तियों में मैत्री पैदा करके उनका एक साथ उपयोग किया जा सकता है। या फिर उन्हें मिलाकर एक शक्ति के रूप में उपयोग किया जा सकता है। केवल तभी वे शक्तिशाली होंगी। मैं इस मित्रता से उत्पन्न होने वाली शक्ति को 'नई ऊर्जा' कहता हूँ।

तीनों गुणों का मिश्रण प्रत्येक व्यक्ति में एक अनोखे तरीके से होता है। इसलिए, अपने भीतर तीनों गुणों को मिलाने का तरीका ढूंढें, किसी विशिष्ट परिणाम की अपेक्षा किए बिना। जैसे ही आप अपने भीतर तीनों विरोधी शक्तियों को मिलाते रहेंगे, आपको बाहरी तौर पर तीन प्रकार

के परिणाम अनुभव होंगे। जैसे ही आप इन परिणामों को दिव्य रूप से अनुभव करेंगे और बाहरी तौर पर प्रकट होने वाली परिणामों की शक्ति को अपने मिश्रण में मिलाएंगे, आपके मिश्रण में परिवर्तन होगा। यदि आप इस अभ्यास को जारी रखते हैं, तो तीनों गुण अंततः संतुलित हो जाएंगे और एक हो जाएंगे।

एक और बात यह है कि केवल वे लोग जिन्होंने पहले तीनों गुणों को अलग-अलग अनुभव किया है, वे इस ज्ञान का अभ्यास करने के पात्र हैं जो मैं साझा कर रहा हूँ। इसलिए, जो लोग केवल तमस का अनुभव कर रहे हैं, उनका कर्तव्य है कि वे तमस को प्राथमिकता दें और अन्य दो को नजरअंदाज करें। जो लोग केवल रजस का अनुभव कर रहे हैं, उनका कर्तव्य है कि वे रजस को प्राथमिकता दें और अन्य दो को नजरअंदाज करें। इसी तरह, जो लोग केवल सत्त्व का अनुभव कर रहे हैं, उनका कर्तव्य है कि वे सत्त्व को प्राथमिकता दें और अन्य दो को नजरअंदाज करें। इसलिए ध्यान रखें कि धर्म उनकी व्यक्तिगत अवस्था के अनुसार बदलता रहता है।

परिणाम

इस तरह, आंखें बंद करके 'पिघलने' का अभ्यास करना और आंखें खोलकर त्रिगुणों का चयन करने से, कई लोगों को अद्भुत परिणाम मिल रहे हैं। विशाखापत्तनम में, एक दंपति ने एक महीने तक यह अभ्यास किया और उनकी वह जमीन, जो दस साल से बिकने का इंतजार कर रही थी, बिक गई। विशाखापत्तनम में किसी ने अपना खोया हुआ सोना ढूंढ लिया। एक महिला को हर महीने असहनीय मासिक दर्द होता था, लेकिन जब उसने खुद से कहा कि दर्द केवल 33% है, तो दर्द काफी कम हो गया। एक आदमी सोने के प्रति आकर्षित होता था, लेकिन इस अभ्यास के बाद, उसका आकर्षण कम हो गया।

पत्नी पति पर 20 किलोमीटर दैनिक यात्रा करने के लिए दबाव डाल रही थी। पति को दबाव डालने के प्रति नफरत थी। इस ज्ञान को जानने के बाद, पति ने दबाव ऊर्जा से कहा कि वह रहे, लेकिन केवल 33.33%। इससे बाहर पत्नी में परिवर्तन आया। उसने पति से कहा कि "दैनिक यदि आप यात्रा करते हैं तो आप कमजोर हो जाएंगे, इसलिए केवल छुट्टियों पर आएं।" कई लोग कह रहे हैं कि वे अंदर शांति और खुशी महसूस कर रहे हैं। इसलिए, आप भी अपने भीतर धर्म की स्थापना करें और सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान ढूंढें।

16.66% या 50:50 साधना

ऊपर बताया गया 33.33% त्रिगुण साधना कुछ दिनों तक अभ्यास करने और विपरीतों के बीच सामंजस्य बनाने में निपुण होने के बाद, आप जीवात्मा आत्मा और परमात्मा को अनुभव करेंगे।

यहाँ, जीवात्मा एक गुण तक ही सीमित रहता है और उसी सीमा तक फैलता है, तथा अपने भीतर के अन्य गुणों को अस्वीकार कर देता है। आत्मा अपने सभी पहलुओं का उपयोग एक साथ करता है, अपने भीतर सभी शरीरों, भागों और अवस्थाओं में फैलता है। परमत्मा निराकार और सर्वव्यापी है, ब्रह्मांड भर में फैलता है, और ब्रह्मांड के भीतर सभी रूपों में भी उपस्थित है, और सभी रूप स्वयं हैं।

जब आप नकारात्मक, सकारात्मक, तटस्थ, जीवात्मा, आत्मा और परमत्मा के अस्तित्व को समझते हैं, तो 16.66% या 50:50 साधना शुरू करें। इसका अर्थ है कि आपके शरीर, मन और हृदय में 50% परमत्मा से संबंधित होना चाहिए और 50% संसार से संबंधित होना चाहिए। साथ ही, परमत्मा से संबंधित 50% में, 16.66% जीवात्मा अर्थात आपके से संबंधित होना चाहिए, 16.66% आत्मा से और 16.66% परमत्मा से; इसी तरह, संसार से संबंधित 50% में, 16.66% सकारात्मक होना चाहिए, 16.66% नकारात्मक और 16.66% तटस्थ।

इस प्रकार, अंदर और बाहर, अलग-अलग अनुभव करें कि, स्वयं सहित सब कुछ, सकारात्मक-नकारात्मक-तटस्थ-जीवात्मा-आत्मा-परमात्मा के समान मिश्रण से बना है। साथ ही पूरे विश्व को सामूहिक रूप से अनुभव करें, जिसमें सब कुछ सकारात्मक-नकारात्मक-तटस्थ-जीवात्मा-आत्म-परमात्मा के समान मिश्रण से बना है।

99%:1% साधना

16.66% साधना में प्रवीण होने के बाद, 99%:1% साधना शुरू करें। दुनिया में सब कुछ, मानव सहित, परमाणुओं से बना है। क्वांटम फिजिक्स के अनुसार, हमारे शरीर का 99% खाली स्थान है, और केवल 1% ही पदार्थ या रूप है। इसलिए, अनुभव करें कि इस ब्रह्मांड में प्रत्येक वस्तु (सकारात्मक, नकारात्मक, तटस्थ) 1% रूप और 99% निराकार, शुद्ध ऊर्जा चेतना से बना है। साथ ही, हमेशा अनुभव करें कि तीनों गुण इस 1% रूप के भीतर समान भागों में मिले हुए हैं।

इसलिए, अंदर और बाहर, अलग-अलग अनुभव करें कि, आपके सहित सब कुछ, 1% रूप और 99% निराकार शुद्ध ऊर्जा चेतना से बना है। साथ ही सम्पूर्ण विश्व का सामूहिक रूप से अनुभव करें, जिसमें प्रत्येक वस्तु 1% आकार और 99% निराकार शुद्ध ऊर्जा चेतना से बनी है।

इस विषय पर अधिक जानकारी के लिए 'विश्वास-तत्काल परिणाम', 'द्वैत-शून्य-एकता' विषयों को पढ़ें।

** To know more about Quantum Physics click this link..
https://www.youtube.com/post/UgkxJnSt137p0tvQw9L5eyagYR55EbHB8k7O

** यह ज्ञान तेलुगु भाषा से अनुवादित है। तेलुगु या अन्य भाषाओं में यह ज्ञान पढ़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें **http://darmam.com/library.html**

त्रिगुण साधना

हम आमतौर पर सोचते हैं कि, जो कुछ भी हमारे भाग्य में होता है वह हमारे पास आता है। यानी अच्छा है तो अच्छा आएगा या बुरा है तो बुरा आएगा। लेकिन अब से इस विश्वास को बदल दो. त्रिगुण समान रूप से मिश्रित शुद्ध ऊर्जा-चेतना, भाग्य से, सभी से, मेरे पास आरही है। इसी तरह, त्रिगुण (अच्छे बुरे तटस्थता) समान रूप से मिश्रित शुद्ध ऊर्जा-चेतना को मैं सबको भेजूंगा. जब हम इस शुद्ध अवस्था के साथ घुलमिल जाते हैं, तभी हमें स्वतंत्र इच्छा(FreeWill) प्राप्त होगी। अर्थात अंदर और बाहर यह विश्वास रखें कि, शुद्ध ऊर्जा-चेतना, हर चीज से हर चीज में प्रवाहित हो रही है।